❍ 19 / 07 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5∗4=20)

➢➢ ∗आपार ख़ुशी में रहे ?∗

➢➢ ∗बापदादा समान निरहंकारी बनकर रहे ?∗

➢➢ ∗"एक बाप दूसरा न कोई" - इस स्थिति द्वारा सदा एकरस और लवलीन रहे ?∗

➢➢ ∗"मैं बाप का, बाप मेरा" - दिल में सदा यही अनहद गीत बजता रहा ?∗

────────────────────────

✧°˚••☆••✧°˚••☆••✧°˚••☆••✧°˚

☆ ∗अव्यक्त पालना का रिटर्न∗ ☆

❂ ∗तपस्वी जीवन∗ ❂

✧°˚••☆••✧°˚••☆••✧°˚••☆••✧°˚

〰✧ कितना भी कोई भटकता हुआ, परेशान, दु:ख की लहर में आये, खुशी में रहना असम्भव भी समझते हो लेकिन आपके सामने आते ही आपकी मूर्त, आपकी वृत्ति, आपकी दृष्टि आत्मा को परिवर्तन कर दे। ∗सेवा में बेहद की वैराग्य वृत्ति अन्य आत्माओं को और समीप लायेगी। मुख की सेवा सम्पर्क में लाती है और वृत्ति से वायुमण्डल की सेवा समीप लायेगी।∗

✧°˚••☆••✧°˚••☆••✧°˚••☆••✧°˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚
☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆
❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂
✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✺ *"मैं बाप समान निराकारी और आकारी स्थिति में स्थित रहने वाली आत्मा हूँ"*

〰✧ बाप समान निराकारी और आकारी-इसी स्थिति में स्थित रहने वाली आत्मायें अनुभव करते हो? *क्योंकि शिव बाप है निराकारी और ब्रह्मा बाप है आकारी। तो आप सभी भी साकारी होते हुए भी निराकारी और आकारी अर्थात् अव्यक्त स्थिति में स्थित हो सकते हो।* या साकार में ज्यादा आ जाते हो?

〰✧ *जैसे साकार में रहना नेचुरल हो गया है, ऐसे ही 'मैं आकारी फरिश्ता हूँ'और 'निराकारी श्रेष्ठ आत्मा हूँ'-यह दोनों स्मृतियां नेचुरल हों। क्योंकि जिससे प्यार होता है, तो प्यार की निशानी है समान बनना।* बाप और दादा-निराकारी और आकारी हैं और दोनों से प्यार है तो समान बनना पड़ेगा ना। तो सदैव यह अभ्यास करो कि अभी-अभी आकारी, अभी-अभी निराकारी। साकार में आते भी आकारी और निराकारी स्थिति में जब चाहें तब स्थित हो सकेंगे।

〰✧ जैसे स्थूल कर्मेन्द्रियां आपके कन्ट्रोल में हैं। आंख को वा मुख को बंद करना चाहो तो कर सकते हो। ऐसे मन और बुद्धि को उसी स्थिति में स्थित कर सको जिसमें चाहो। अगर फरिश्ता बनने चाहें तो सेकेण्ड में फरिश्ता बनो- ऐसा अभ्यास है या टाइम लगता है? क्योंकि हलचल जब बढती है तो ऐसे

समय पर कौनसी स्थिति बनानी पड़ेगी? आकारी या निराकारी। *साकार देहधारी की स्थिति पास होने नहीं देगी, फेल कर देगी। अभी भी देखो-किसी भी हलचल के समय अचल बनने की स्थिति 'फरिश्ता स्वरूप' या 'आत्म-अभिमानी' स्थिति ही है। यही स्थिति हलचल में अचल बनाने वाली है।*

⟡˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

⟡˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

⟡˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

⟡˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ आवाज से परे जाने की युक्ति जानते हो? *अशरीरी बनना अर्थात आवाज से परे हो जाना।* शरीर है तो आवाज है। *शरीर से परे हो जाओ तो साइलेंस।* साइलेंस की शक्ति कितनी महान है, इसके अनुभवी हो ना? साइलेंस की शक्ति द्वारा सृष्टि की स्थापना कर रहे हो।

〰✧ *साइंस की शक्ति से विनाश, साइलेंस की शक्ति से स्थापना।* तो ऐसे समझते हो कि हम अपनी साइलेंस की शक्ति द्वारा स्थापना का कार्य कर रहे हैं। हम ही स्थापना के कार्य के निमित है तो *स्वयं साइलेंस रूप में स्थित रहेंगे तब स्थापना का कार्य कर सकेंगे।* अगर स्वयं हलचल में आते तो स्थापना का कार्य सफल नहीं हो सकता।

〰✧ विश्व में सबसे प्यारे से प्यारी चीज है - 'शान्ति अर्थात साइलेंस।" इसके

लिए ही बडी-बडी कानफ्रेंस करते हैं। शान्ति प्राप्त करना ही सबका लक्ष्य है। यही सबसे प्रिय और शक्तिशाली वस्तु है। और आप समझते हो *साइलेंसे तो हमारा 'स्वधर्म' है।* आवाज में आना जितना सहज लगता है उतना सेकण्ड में आवाज से परे जाना - यह अभ्यास है?

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 4 ∬ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ योग में बैठने समय बापदादा के गुणों के गीत गाओ। तो खुशी से दर्द भी भूल जायेगा। *खुशी के बिना सिर्फ यह प्रयत्न करते हो कि मैं आत्मा हूँ मैं आत्मा हूँ, तो इस मेहनत के कारण दर्द भी फील होता है। खुशी में रहो तो दर्द भी भूल जायेगा।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 5 ∬ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 6 ∬ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- विकर्मो का सन्यास कर कोई भी पाप कर्म नही करना"*

➳ _ ➳ ईश्वरीय यादो में प्यारे से हो गए अपने मन... और बुद्धि से बाते करती हुई मै आत्मा... अपने खुबसूरत भाग्य के नशे में डूबी हुई सोच रही हूँ... *संगम के वरदानी समय में कैसे मुझ आत्मा ने भगवान को साक्षात् पा लिया है.*.. आज बाबा की गोद में पल रही हूँ कि... देखती हूँ मुस्कराते हुए... मीठे बाबा मेरे सम्मुख खड़े बड़े ही स्नेह से निहार रहे... और अपनी बाहें फैलाकर मुझे पुकार रहे है...

❉ *मीठे बाबा मुझ आत्मा को ज्ञान और योग के बाँहों में भरते हुए बोले :-* " मीठे प्यारे फूल बच्चे... संगम के वरदानी समय पर हर साँस और संकल्प को शिप पिता की यादो में लगा कर... दुखो के जंजालों से मुक्त हो जाओ... *ईश्वर पिता सम्मुख होने के खुबसूरत समय पर कोई भी पाप कर्म कर.पुनः विकर्मो का खाता नही बनाओ.*.. दिल से मीठे बाबा को याद करो..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा बड़े ही दिल से बाबा के महावचन सुनकर कहने लगी :-* " मीठे प्यारे बाबा मेरे... *आपने यूँ अचानक से जीवन में आकर जीवन को पुण्यो की बहार बना दिया है.*.. इसके पहले तो सच्चे पुण्य को मै आत्मा जानती तक न थी... अब आपके साथ भरे यह मीठे पल मै आत्मा सदा आपकी यादो में ही बिताउंगी... यह दिलबर को दिल से मेरा वादा है..."

❉ *प्यारे बाबा मुझे स्नेह के आँचल में समाते हुए बोले :-* " मेरे सिकीलधे लाडले बच्चे... जनमो की बिछुड़न के बाद अपने पिता से पुनः मिले हो... तो *उनकी श्रेष्ठ मत पर चलकर इस मिलन को अमुल्य बना दो.*.. परमात्म

मिलन् के सुंदर समय पर अब विकर्मो का सन्यास कर जीवन को पुण्यो से सजा दो... और देवताओ सा सुंदर जीवन सहज ही पा लो..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा भगवान पिता को अपने जीवन को यूँ खुबसूरत सजाते देख बोली :-* " मेरे प्यारे मीठे बाबा... मै आत्मा *आपकी फूलो सी गोंद में बेठकर गुणो की खुशबु से भरती जा रही हूँ.*.. मीठे बाबा... मुझ आत्मा को जिन सच्ची पुण्यो की राहो का... आपने राही बनाया है, उसपर आप चलकर सबको यह पुण्यो का खुबसूरत रास्ता बताती जा रही हूँ..."

❉ *ज्ञान सागर बाबा मुझ आत्मा के कल्याण अर्थ कहने लगे :-* "मीठे मीठे बच्चे... देह की दुनियावी आकर्षण में उलझकर ही तो जीवन दुखो का पहाड़ बन गया है... अब ईश्वरीय यादो में रह इस आकर्षण से मुक्त होकर... सुख, शांति और प्रेम से भरपूर जीवन का आनन्द लो... मीठे *बाबा से अनन्त शक्तियाँ लेकर... विकारो से परे रह, पुण्यो से दामन भर लो.*.."

➳ _ ➳ *मै आत्मा अपने मीठे बाबा को बड़े ही प्यार से निहारते हुए कह रही हूँ :-* "प्यारे *बाबा आपके बिना यह जीवन कितना बेनूर और सूना सूना सा था..*. श्रीमत के बिना कितना उजड़ा सा था... आपने आकर ज्ञान की खनक और योग की रौनक से इसे कितना प्यारा बना दिया है... पाप की ढेरी पर बेठी मुझ आत्मा को उठाकर पुण्यो के सिहांसन पर बिठा दिया है..." इन प्यार भरी बातो से स्वयं को तृप्त कर मै आत्मा अपने कर्म क्षेत्र पर आ गयी...

∬ 7 ∬ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- बाप दादा समान निरहंकारी बनना है*"

➽ _ ➽ निराकारी, निर्विकारी और निरहंकारी इन तीन शब्दों के आधार पर ही ब्रह्माबाबा ने पुरुषार्थ कर सम्पूर्णता को प्राप्त किया। *सृष्टि के रचयिता, ऑल माइटी अथॉरिटी भगवान भी निरहंकारी बन हम बच्चों की सेवा के लिए पतित तन, पतित दुनिया मे आये*। तो ऐसे बापदादा समान निरहंकारी बन सम्पूर्णता के लक्ष्य को पाने के लिए अपने सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण जीवन के शुद्ध नशे में रह, *बापदादा समान निरहंकारी बनने का लक्ष्य रख मैं अव्यक्त फ़रिशता बन मधुबन के पांडव भवन में पहुंच जाता हूँ और हिस्ट्री हाल में लगे चित्रों को निहारने लगता हूँ* जिनमे ब्रह्मा बाबा के श्रेष्ठ कर्मो की गाथा सहज ही परिलक्षित होती है।

➽ _ ➽ हर चित्र को मैं बड़ी गहराई से देख रहा हूँ और हर चित्र में बाबा के निरहंकारी होने के गुण की झलक स्पष्ट दिखाई दे रही है। बाबा के हर कर्म के यादगार चित्रों को देखते देखते साकार ब्रह्मा बाबा के एक कर्म का दृश्य मेरी आँखों के सामने स्पष्ट दिखाई देने लगता है। मैं देख रहा हूँ कि *यज्ञ वत्सों के साथ ब्रह्मा भोजन के लिए सब्जी काटने के स्थूल कार्य में बाबा जुटे हुए हैं*। सभी कह रहे हैं, बाबा:- यह कार्य हम बच्चों का है। आपके वृद्ध हाथ हैं। आपको कार्य करते देख हमारे मन को कुछ होता है। यह कार्य हमें करने दीजिए।

➽ _ ➽ यज्ञ वत्सों की बात सुन कर ब्रह्मा बाबा कहते हैं:-" मैं भी शिव बाबा का बच्चा हूं। हमारा तो कर्म योग है। यदि हम स्थूल कार्य न करें तो यह कर्म योग कैसे सिद्ध होगा! *बच्चों, यज्ञ की सेवा सर्वोत्तम सेवा है। इसके लिए तो दधीचि ऋषि की तरह हड्डिया देनी हैं*। हमारा यह अलौकिक जन्म ही सेवा के लिए है। स्वयं शिव बाबा कहते हैं कि:- "मैं आत्माओं की सेवा पर उपस्थित हुआ हूँ"। तो हम बच्चों को भी तो सेवाधारी बनना है। *हर प्रकार का कार्य करते हुए भी शिव बाबा की याद में रहने का अभ्यास करना है ताकि स्थिति एकरस और योग निरंतर हो जाए*। इस प्रकार की युक्तियां देकर बाबा अपनी बात मनवा रहे हैं।

➳ _ ➳ इस दृश्य को देखते देखते बाबा के प्रति और स्नेह उमड़ने लगता है और मैं फ़रिशता चल पड़ता हूँ बापदादा से मिलने उस अव्यक्त वतन में जहां ब्रह्मा बाबा अव्यक्त हो कर आज भी हम बच्चों की सेवा कर रहें हैं, अव्यक्त पालना में भी साकार पालना का अनुभव करवा रहे हैं। *बच्चों के इंतजार में बाहें पसारे खड़े ब्रह्मा बाबा के चेहरे की गुह्य मुस्कुराहट दूर से ही अपनी तरफ आकर्षित कर रही है*। बिना एक पल भी व्यर्थ गंवाए मैं दौड़कर बाबा की बाहों में समा जाता हूँ और बाबा का असीम स्नेह मुझ पर बरसने लगता है। मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए बाबा का दुलार करना मुझे अंदर तक रोमांचित कर देता है।

➳ _ ➳ अब बाबा मुझे अपने पास बिठाकर अपनी मीठी दृष्टि से मुझे भरपूर कर रहे हैं। अपने हाथों में मेरा हाथ लेकर अपनी सर्व शक्तियां मुझ में प्रवाहित कर रहे हैं और साथ-साथ मुझे आप समान निरहंकारी बनने की प्रेरणा भी दे रहे हैं। *बापदादा से मधुर मिलन मनाकर, विकर्म विनाश करने और आत्मा के ऊपर चड़ी हुई विकारों की अशुद्धता को मिटाने के लिए अब मैं आपने निराकारी ज्योति बिंदु स्वरुप में स्थित होकर चल पड़ती हूं परमधाम अपने ज्ञानसूर्य परम पिता परमात्मा शिव बाबा के पास*।

➳ _ ➳ परमधाम में अपनी निराकारी बीज रूप अवस्था मे अपने बीज रूप परम पिता परमात्मा शिव बाबा के सामने अब मैं उपस्थित हूँ। उनसे निकलती अनन्त सर्वशक्तियों की किरणें मुझ आत्मा पर पड़ रही हैं। *धीरे धीरे ये किरणे ज्वाला स्वरूप धारण करती जा रही है और इन ज्वाला स्वरुप किरणों के मुझ आत्मा पर पड़ने से आत्मा के ऊपर चढ़ी सारी अशुद्धता खत्म होती जा रही है और मैं आत्मा एकदम हल्की, शुद्ध होती जा रही हूँ*। मेरा स्वरूप अत्यंत शक्तिशाली व चमकदार बनता जा रहा है। ऐसा लग रहा है जैसे मेरे प्यारे शिव बाबा ने मुझे शुद्ध बना कर सर्वशक्तियों को समाने की ताकत दे दी हो।

➳ _ ➳ बाबा से आ रही सर्वशक्तियों को स्वयं में समा कर, परमात्म शक्तियों से स्वयं को भरपूर कर, शुद्ध रीयल गोल्ड बन कर अब मैं आत्मा वापिस साकारी दुनिया मे लौट रही हूं। *अपने साकारी तन में प्रवेश कर अब मैं

अपने श्रेष्ठ ब्राह्मण जीवन के शुद्ध अहंकार में रह, बापदादा समान निरहंकारी बन अपने तन - मन - धन को ईश्वरीय सेवा में सफल कर रही हूं*।

————————————————

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं "एक बाप दूसरा न कोई" इस स्थिति द्वारा सदा एकरस और लवलीन रहने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं सहजयोगी आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

————————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव बाप की, बाप मेरा है ।*
✺ *मैं आत्मा दिल में सदा यही अनहद गीत बजाती रहती हूँ ।*
✺ *मैं निरन्तर योगी आत्मा हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

————————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✳ अव्यक्त बापदादा :-

➻ _ ➻ *“आज ज्ञान गंगाओं और ज्ञान सागर का मिलन मेला है*। जिस मेले में सभी बच्चे बाप से रूहानी मिलन का अनुभव करते। बाप भी रूहानी बच्चों को देख हर्षित होते हैं और बच्चे भी रूहानी बाप से मिल हर्षित होते हैं। क्योंकि *कल्पकल्प की पहचानी हुई रूहानी रूह जब अपने बुद्धियोग द्वारा जानती हैं कि हम भी वो ही कल्प पहले वाली आत्माएं हैं और उसी बाप को फिर से पा लिया है तो उसी आनन्द, सुख के, प्रेम के, खुशी के झूले में झूलने का अनुभव करती हैं*। ऐसा अनुभव कल्प पहले वाले बच्चे फिर से कर रहे हैं। वो ही पुरानी पहचान फिर से स्मृति में आ गई। ऐसे स्मृति स्वरूप स्नेही आत्मायें इस स्नेह के सागर में समाई हुई लवलीन आत्मायें ही इस विशेष अनुभव को जान सकती हैं।

➻ _ ➻ स्नेही आत्मायें तो सभी बच्चे हो, स्नेह के शुद्ध सम्बन्ध से यहाँ तक पहुँचे हो। फिर भी स्नेह में भी नम्बरवार हैं, कोई स्नेह में समाई हुई आत्मायें हैं और कोई मिलन मनाने के अनुभव को यथाशक्ति अनुभव करने वाले हैं। और कोई इस रूहानी मिलन मेले के आनन्द को समझने वाले, समझने के प्रयत्न में लगे हुए हैं। फिर भी सभी को कहेंगे - ‘स्नेही आत्मायें'। *स्नेह के सम्बन्ध के आधार पर आगे बढ़ते हुए समाये हुए स्वरूप तक भी पहुँच जायेंगे*। समझना - समाप्त हो समाने का अनुभव हो ही जायेगा - क्योंकि *समाने वाली आत्माएँ समान आत्माएँ हैं। तो समान बनना अर्थात् स्नेह में समा जाना*।

➻ _ ➻ तो अपने आप को स्वयं ही जान सकते हो कि कहाँ तक बाप समान बने हैं? * बाप का संकल्प क्या है? उसी संकल्प समान मुझ लवलीन आत्मा का संकल्प है*? ऐसे वाणी, कर्म, सेवा सम्बन्ध सब में बाप समान बने हैं? वा अभी तक महान अन्तर है वा थोड़ा सा अन्तर है? *अन्तर समाप्त होना ही - ‘मन्मनाभव का महामंत्र है'। इस महामंत्र को हर संकल्प और सेकण्ड में स्वरूप में लाना इसी को ही समान और समाई हुई आत्मा कहा जाता है*।

✹ *"ड्रिल :- मनमनाभव के महामंत्र से बाप के स्नेह में समा बाप के साथ रूहानी मिलन मनाना।"*

➳ _ ➳ देह रूपी दीपक में, मैं जलती बाती के समान जगमग आत्मज्योति... अपने प्रकाश से अंधकार को पराजित करती हुई... (दृश्य चित्र बनाकर खुद को कुछ देर तक महसूस कीजिए इसी स्वरूप में) *परमात्म स्नेह के तेल में पूरी तरह डूबी हुई, मुझ बाती का प्रकाश हर पल एक नई चेतना फैलाता हुआ, विघ्नों की तूफानी हवाओं में भी दूर दूर तक फैल रहा है...* साक्षी भाव से मैं देख रही हूँ स्वयं को दीपक से अलग होती हुई... दीपक अपनी जगह पर स्थित है और मैं ज्योति आहिस्ता आहिस्ता उससे अलग होकर फरिश्तें की काया धारण कर लेती हूँ... दो मिनट रूक कर देख रही हूँ मैं उस दीपक को जो एकदम अचल अवस्था में है... और आहिस्ता आहिस्ता उड जाती हूँ अनन्त की ओर... मैं फरिश्ता उडता जा रहा हूँ, अपने पीछे मोह माया की अनेक ऊँची अट्टालिकाओं को छोडता हुआ... स्वयं से बातें करता हुआ... *कल्प कल्प की पहचानी रूहानी रूह अब अपने बुद्धि योग से जान गयी है कि मैं वही कल्प पहले वाली आत्मा हूँ, मैने बाप को फिर से पा लिया है*... बाप से स्नेह मिलन मनाने और बाप समान बनने के लिए मैं चार धाम की यात्रा पर जा रही हूँ... और मैं आत्मा पाण्डव भवन के मुख्य प्रवेश द्वार पर... फरिश्ता रूप में स्वयं बापदादा द्वार पर ही मेरा इन्तजार कर रहे हैं... दौडकर गले से लग गया हूँ मैं उनके... ये मिलन अनोखा मिलन है संगम पर... *सागर की बाँहों में ज्ञान गंगा समा गयी हैं और अब दोनों एक समान*... अन्तर करना नामुमकिन है कि सागर में गंगा की धारा कौन सी है?...

➳ _ ➳ बापदादा की उँगली पकडे मैं फरिश्ता बैठ गया हूँ उनके संग कुटिया के सामने झूले पर... अतिन्द्रिय सुख का ये झूला... मेरे एक ओर ब्रह्माबाबा तो दूसरी ओर धारणा शक्ति मम्मा, मुस्कुराती हुई... *झूले के ऊपर वृक्ष की शाखाओं से झाँकते शिव सागर स्नेह की बारिश करते हुए... बाबा के कन्धे पर शीश झुकाये, मम्मा की आँखों से धारणा शक्ति स्वयं में समाता हुआ और शिव सागर की स्नेह रूपी बारिश में नहाता हुआ*... अपने भाग्य पर इठला रहा हूँ आज... स्नेह की बारिश में भीगता मेरा रोम रोम... कुछ देर तक ऐसे ही निहारें स्वयं को साक्षी होकर... जन्मों की थकान मिटती जा रही है.आत्मा हीरें की तरह

पारदर्शी होती जा रही है... मैं और मेरे पन के संस्कार, तू और तेरा में बदल रहें है... देहभान का त्याग, सेवा के विस्तार का त्याग और त्याग का भी त्याग, कितनी श्रेष्ठ स्थिति है मुझ आत्मा की इस समय... *मैं देख रही हूँ इस स्नेह के सागर के तल को बढते हुए... सागर के जल का स्तर बढता ही जा रहा है... जल मेरे कन्धों तक आ गया है... बाबा की कुटिया, बाबा का कमरा शक्ति स्तम्भ और हिस्ट्री हॉल... सभी हाऊस बोट की तरह तैर रहे है इस सागर पर*...

➽ _ ➽ मैं फरिश्ता बापदादा की कुटिया में बाबा से रूहरिहान करता हुआ... *एक एक संकल्प बापदादा को समर्पित करता... बापदादा मुस्कुराकर मन्मनाभव का मन्त्र दे रहे है मुझे*... उनका वरदानी हाथ मेरे सिर पर... गहराई से देर तक महसूस कर रहा हूँ उन उँगलियों के स्पर्श को... मेरा रोम रोम पुलकित हो रहा है... *बापदादा के साथ मैं फरिश्ता बाबा के कमरें में... मैं बैठ गया हूँ घुटनों के बल बापदादा के ठीक एकदम करीब जाकर... और मुस्कुराते हुए बाबा मुझे आप समान बनने का वरदान दे रहे है*... वरदान को गहराई में समाता हुआ मैं फरिश्ता... अब पँहुच गया हूँ शक्ति स्तम्भ पर, *स्वयं में स्नेह और शक्तियों का बैलेन्स भरा हुआ*... स्नेह की धाराए हाऊसबोट में मुझे भिगो कर जा रही है... हिस्ट्री हॉल में मैं फरिश्ता... देख रहा हूँ सन्दली पर बैठे बापदादा एक एक आत्मा को दृष्टि से निहाल करते हुए... मैं बापदादा के ठीक सामने बापदादा से दृष्टि लेते हुए... उनकी आँखों से बरसता रूहानी नूर मेरे जन्मों जन्मों के विकर्मों को भस्म कर रहा है... *मैं फरिश्ता स्थिर हो गया हूँ सिर्फ एक संकल्प में... जो बापदादा का संकल्प वही मेरा सकंल्प... मन्मनाभव का मन्त्र गहराई से धडकनों में गूँज रहा है*...

➽ _ ➽ बाहर भीतर सब जगह बस स्नेह की बारिश और स्नेह का सागर लहरा रहा है... हाऊस बोट से उतरकर मैं बापदादा की उँगली पकडे सागर में तैरती हुई गहराई में डुबकियाँ लगाती हुई... किनारे खडी आत्माओं का आह्वान कर रही हूँ... और *एक साथ किनारों पर खडी असंख्य आत्माए मेरे साथ उस सागर में समाती जा रही है... सागर में तैरती मणियों के समान*... मैं आत्मा वापस झूले पर बापदादा के साथ... बापदादा से विदाई लेकर वापस उसी देह रूपी दीपक में... पहले से ज्यादा मिठास और स्नेह के साथ अंधकार को पराजित

करने का संकल्प मन में समाए...

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔